आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/ अंक 3/सितंबर 2024
Received: 14/09/2024; Published: 26/09/2024

कहानी

किसान का बड़ा बेटा

- ज्योती भंडारे

ज्योती भंडारे, **किसान का बड़ा बेटा** ,आखर हिंदी पत्रिका, खंड 4/ अंक 3/सितंबर 2024, (261-262)

कृष्णा नदी के किनारे एक छोटा सा गांव था। उस गांव में एक किसान रहता था। उस किसान को दो बेटे थे। किसान बड़े बेटे को अपने पास रखवाकर खेती कराना चाहता था और दूसरे बेटे को पढ़ा लिखाकर बढ़ा आदमी बनाना चाहता था। अब बढ़ा बेटा बड़ा हो गया था। वह खेत में रात दिन मेहनत करके घर की जिम्मेदारियों को बहुत ही अच्छी तरह से निभाने लगा। छोटी दो बहनों की भी शादी कराई गई। अब बड़े बेटे की भी शादी कर देते है। शादी के बाद भी बढ़ा बेटा दिन रात एक करके पसीना बहाकर काम करने लगा। और पूरे गांव में अपना और अपने परिवार का नाम रोशन करने लगा था।

किसान छोटे बेटे को पढ़ा लिखाकर बढ़ा आदमी बनाना चाहता था। इसीलिए किसान और किसान का बढ़ा बेटा खेतों में काम करने लगे और छोटे बेटे को शहर भेजा गया। उसको किसी भी चीज की कमी महसूस नहीं होने दिया। जैसे कि किताबे, कपड़े और पैसे। अब छोटा बेटा शहर में पढ़ने लगा था। घर में सब बहुत खुश थे कि हमारा छोटा मेट्रीक में पढ़ रहा है। और पास होने के बाद वह नौकरी करेगा और हमारा नाम रोशन करेगा, सोच रहे थे। मेट्रीक में छोटा पास नही हुआ। उस दिन किसान का दिल टूट गया। बड़े बेटे ने पिताजी को समझाया कि पास नही हुआ तो क्या हुआ, हम उसे कोई अलग नौकरी लगने जैसा कोर्स करवाएंगे। तो किसान मान गया और छोटे बेटे को तीन साल का कोर्स करने फिर से शहर भेज देते है। परंतु छोटा बेटा घर में सबसे छोटा और लाडला था। उसे यह पता नहीं था कि उसे जो पैसे मिलते हैं वह पसीना बहाने के बाद आते हैं। उसके लिए पिता और भाई कितना काम करते हैं इसका खयाल उसे नही था। शहर में उसे जितने चाहिए उतने पैसे उसे मिलते थे। छोटे का दिमाग कोर्स में न लग कर बाहर दोस्तों में लगने लगा। वह बाहर दोस्तों के साथ मौज मस्ती में तीन साल बर्बाद करके घर लौटा। बेटे ने कोर्स पुरा नही किया सोचकर किसान का दिल फिर से टूट गया।

जब छोटा बेटा शहर में था, तब किसान और किसान की पत्नी बड़े बेटे और बहु को बहुत ताने सुनाने लगे। उसके तीन बच्चे थे इसीलिए उसे तुम्हारे पांच पेट हैं, इन सबको कितना सारा खाना लगता है कहने लगी। बहु को

मारने लगे। एक दिन सास बहु को बहुत ज्यादा मारने लगी, तो बढ़े बेटे ने गांव के सरपंच और गांव के लोगों को इकट्ठा किया और सरपंच ने कहा कि इतना क्यों मरती हो, आखिर तुम्हारा ही बेटा और बहू है। तो सास ने कहा कि ये मेरा बेटा नही है, ये कौन है मुझे पता नहीं कहकर तीन छोटे छोटे बच्चों के साथ बढ़े बेटे और बहु को घर से बाहर निकालती है।

इधर छोटा बेटा मौज मस्ती में बढ़ा हो गया। शादी के लायक हो गया था। एक शहर की अच्छी लड़की के साथ छोटे बेटे की शादी कर देते है। इतने दिनों तक किसान और बढ़े बेटे ने पसीना बहाकर कमाया हुआ सारा धन अब किसान की पत्नी और छोटे बेटे के पास था। किसान कुछ भी नहीं कर पाया वह लाचार था।

छोटे बेटे के पास बहुत धन था, वह बाहर ही ज्यादा रहता था। मां और पत्नी को जो चाहिए वह सब लाकर देता था। अब किसान को भी खेत में काम करना नही हो रहा थ। इसीलिए उसे भी पत्नी, बेटे और बहु से ताने और गलिया सुनने पड़ते थे। क्रमेण कमाया हुआ धन कम होने लगा। इसीलिए छोटे बेटे ने माता और पिता को घर से बाहर निकाल देता है। अपनी पत्नी बच्चों के साथ आराम से रहने लगता है। वह न खेत में काम करना जनता था और न ही नौकरी करना। वह सिर्फ पैसों को उड़ाना जानता था।

किसान और किसान की पत्नी बढ़े बेटे के घर आते हैं। माता पिता को बहुत आदर और सम्मान के साथ बढ़ा बेटा और बहू उन्हे घर में लेते हैं। उधर छोटा बेटा तो पसीना बहाकर काम करना तो नही जनता था। आखिर कोई कितने दिनों तक दूसरों से कमाया हुआ धन खा सकता है। सारा धन खतम होने के बाद छोटे बेटे की पत्नी भी अपने बच्चों को साथ लेकर हमेशा के लिए मायके चली जाती है। अब रोते हुए वह भी अपने बढ़े भाई के घर आता है। फिर से सारे घर की जिम्मेदारियों को बढ़ा बेटा निभाने लगता है।

****